International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(1): 88-89

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(1): 88-89
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 21-11-2016
Accepted: 22-12-2016

सरोज कुमारी
शोध–छात्रा (पी0एच–डी0)
संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश
विश्वविद्यालय, शिमला

Correspondence
सरोज कुमारी
शोध–छात्रा (पी0एच–डी0)
संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश
विश्वविद्यालय, शिमला

गंगाजल का पौराणिक महत्त्व

सरोज कुमारी

सारांश
गंगाजल की महिमा को हिन्दू धर्म में ही नहीं बल्कि सभी धर्मों में स्वीकार किया गया है। गंगाजल को अमृत की संज्ञा भी दी गयी है क्योंकि जब राजा भगीरथ गंगा जी को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाये थे, उस समय मार्ग में आते हुये हिमालय पर्वत अनेक जीवदायिनी औषधियों व वनस्पतियों से भरा हुआ था, जिस कारण गंगाजल को अमृततुल्य भी कहा गया है। गंगाजी की महिमा ऋग्वेद से लेकर हर ग्रन्थ में अन्वित है। हिन्दू धर्म में यदि गंगाजल को किसी की मृत्यु के समय पिलाया जाये, तो उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है, ऐसी मान्यता है। यह मन्दिरों में चरणामृत के रूप में भी दिया जाता है, जो आत्मा की शुद्धि करता है।

ऋग्वेद के अनुसार जल को प्राणतत्त्व के रूप में स्वीकार किया गया है, पवित्र जल में अमृत का निवास बताया गया है। उसमें ऐसे दिव्य औषधीय गुण विद्यमान रहते हैं, जो व्यक्ति को रोगमुक्त करने की क्षमता रखते हैं। इसीलिये इसे अमृततुल्य भेषज (औषधि) कहा गया है।[1]

श्रीमद्भगवद् पुराण के अनुसार बताया गया है कि गंगाजल के पावन स्पर्श से शरीर की राख को भी दिव्यता प्राप्त हो जाती है क्योंकि राजा सगर के भस्म हुये पुत्रों के शरीर गंगाजल के स्पर्श से पुनः दिव्यता को प्राप्त हो गये थे। जो श्रद्धा शक्ति से गंगाजल का सेवन करते हैं, उनके जीवन में सफलता सार्थक होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।[2]

पुराणों के अनुसार गंगाजल को पवित्र माना गया है। कलियुग में इसे प्रत्येक मनुष्य के लिये उपयोगी माना गया है। ऐसे व्यक्ति जो अपनी सद्गति के लिये चिन्तन किया करते हैं, उनको भगीरथी गंगा का दर्शन, स्मरण करना चाहिये क्योंकि यह समस्त पातकों का क्षय करने वाली है।

पद्म पुराण के अनुसार गंगाजल में स्नान करने से, गंगाजल का पान करने से तथा पितृगण का तर्पण करने से सभी पापों से मुक्ति हो जाती है।[3] अग्नि के द्वारा जिस प्रकार रूई और सूखा हुआ तिनका क्षण भर में जल जाता है, उसी प्रकार भगीरथी गंगा के जल से केवल स्पर्शमात्र से ही सारे पाप क्षण भर में ही नष्ट हो जाते हैं।[4] एक सहस्त्र चान्द्रायण व्रत करके जो काया की शुद्धि की जाती है, उससे कहीं अधिक गंगा के जल का पान करने से की जा सकती है।[5]

नारदपुराण के अनुसार भगवान् विष्णु ही सर्वत्र व्याप्त हैं, जो द्रवरूप होकर गंगाजल रूप हो गये हैं।[6] गंगाजल चाहे अपने क्षेत्र में हो अथवा उसमें से किसी नहर आदि रूप में हो, ठण्डा हो या गर्म हो उसके सेवन करने से जीवन के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। वासी जल और वासी अन्न को त्याग करने योग्य माना गया है, परन्तु गंगाजल और तुलसी को वासी होने पर भी सेवन करने योग्य माना गया है।[7] जल के समस्त कणों की गणना हो सकती है, मेरूपर्वत के रत्नों की, सुवर्ण की तथा वहाँ के पत्थरों की गणना हो सकती है परन्तु गंगाजल के गुणों का कोई भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता।[8]

पुराणों के अनुसार सरस्वती नदी का जल तीन महीना, यमुनाजी का जल सात महीना, नर्मदा जी का जल दस महीना परन्तु गंगा जी का जल हमेशा ताज़ा बना रहता है। स्कन्दपुराण के अनुसार गंगाजल बाहर से देखने पर उसी प्रकार है, जिस प्रकार नारियल के अन्दर जल रहता है। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड के बाहर स्थित यह परब्रह्मरूपी जल वाली गंगा है।[9] मनुष्य की आत्मा को जो सन्तुष्टि सौ ऋतुओं से भी नहीं हो सकती परन्तु गंगाजल में स्नान करने से व्यक्ति की आत्मा को तुष्टि प्राप्त हो जाती है।[10]

विष्णु पुराण के अनुसार जिसके जल में स्नान करने से निष्पाप हुये यतिजनों ने भगवान् केशव में चित्त लगाकर अत्युत्तम निर्वाण पद प्राप्त किया है, जो श्रवण, इच्छा, दर्शन, स्पर्श, जलपान, स्नान तथा यशोगान करने से गंगा जी सब प्राणियों को पवित्र करती हैं।[11] गंगाजल में खड़े होकर सप्तर्षिगण प्राणायाम पारायण करते हैं, उनकी तरंगभंगी से जटाकलाप के कम्पायमान होते हुये, अघमर्षण–मन्त्र का जप करते हैं तथा जिनके विस्तृत जलसमूह से आप्लावित होकर चन्द्रमण्डल क्षय होने के बाद पुनः पहले से भी अधिक कान्ति धारण करता है, वे श्री गंगाजी फिर चन्द्रमण्डल से निकलकर मेरूपर्वत के

ऊपर गिरती है और संसार को पवित्र करने के लिये चारों दिशाओं में जाती है।[12] भुक्ति एवं मुक्ति अर्थात् विभिन्न प्रकार के सांसारिक विषयों के उपयोग की सामर्थ्य और अन्ततः मोक्ष प्रदान करना, इस भवदीय गुण का गंगा में सम्यक् विकास हुआ है। इन सभी गुणों को धारण करने वाली गंगा को सादर नमन् किया गया है।[13] भगवान् शिव श्री हरि विष्णु जी से कहते हैं कि इस संसार में जो दुष्ट बुद्धि वाले, दुराचारी, प्रत्येक विषय में कारण ढूँढने वाले, सर्वदासंशयग्रस्त तथा मोहान्ध व्यक्ति ही गंगा को साधारण नदी के समान देखते हैं अथवा वेदादि शास्त्रों की निन्दा करने वाले नास्तिक और निरन्तर पाप कर्म करते रहने से जिनकी दृष्टि विकृत हा गयी है, ऐसे व्यक्ति ही गंगा को साधारण नदी और साधारण पानी की तरह ही देखा करते हैं, परन्तु यह निश्चित है कि जो महिमामयी गंगा का सम्मान नहीं करते हैं, वे सभी नरकगामी हैं।[14]

गंगास्नान के विषय में कहा गया है कि जैसे अंगूर का स्वाद, अंगूर खाने से ही मिल सकता है, वैसे ही गंगास्नान का फल भी गंगा में स्नान करने से ही प्राप्त किया जा सकता है।[15] सांसारिक विषयों के उपभोग के लिये आवश्यक है कि व्यक्ति स्वस्थ एवं निरोगी रहे, परन्तु गंगा जी इस महत्त्वपूर्ण विषय में भी असावधान नहीं हैं। गंगा साक्षात् भेषजमूर्ति हैं, इसके जल में सभी असाध्य रोगों को समाप्त करने की अद्भुत शक्ति है। अस्वस्थ कर देने वाले सब प्रकार के विषों को निष्प्रभावी बना देने की सामर्थ्यता गंगाजल में है।[16] गंगाजल जिन भयंकर रोगों को समाप्त कर देता है, उन रोगों का उल्लेख स्कन्दपुराण के गंगासहस्त्रनामस्तोत्र में इस प्रकार से किया गया है – उद्वेगघ्नी – कुण्ठा परेशानी आदि दूर करने वाली, उष्णशमनी – ज्वरादि से उत्पन्न होने वाली अतिरिक्त गर्मी, कालकूटप्रशमनी – भयानक विष को शान्त करने वाली, दवथुवैरिणी– निमोनिया दूर करने वाली, भ्रान्तिज्ञानप्रशमनी – चक्कर आना, वन्ध्यत्वपरिहारिणी – बाँझपन दूर करने वाली, षण्ढताहारिसलिला – नपुंसकता मिटाने वाली, सर्वव्याधिमहौषधम् – समस्तव्याधियों की महौषधि इत्यादि।[17] जो व्यक्ति सब प्रकार के संशयों से मुक्त होकर श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक गंगास्नान करता है, वह मनुष्य शरीर होते हुये भी दैवीगुणों से सम्पन्न हो जाता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।[18] इसके अतिरिक्त गंगा की महिमा का अतुलनीय वर्णन अनेक पुराणों में उपलब्ध होता है।[19] पौराणिक साहित्य में गंगा जी के अर्थ, उत्पत्ति तथा महिमा का उल्लेख अनेक प्रकार से वर्णित किया है।[20]

निष्कर्ष

वर्तमान समय में गंगा जी श्रद्धालुओं के लिये मात्र एक आस्था का प्रतीक ही नहीं हैं बल्कि एक रोजगारपरक, व्यवसायपरक, स्वास्थ्यपरक तथा परलोक सिद्धिपरक आदि रूपों में प्रतिष्ठित है। इसके जल में अनेक औषधीय गुण हैं। इसके जल में विद्यमान भौतिक गन्दगी भी इसके आध्यात्मिक गुणों को परिवर्तित नहीं कर सकती है। दैवीय गुणों से युक्त होने के कारण गंगा जी की पूजा पूर्वकाल से ही की जाती रही है।

भारतीय संस्कृति में इसे मात्र एक नदी ही नहीं बल्कि एक उदात्त–अवदात चैतन्य धारा के रूप में माना गया है। सृजन एवं चिन्तन से जुड़े हुये प्रत्येक भारतीय गंगा के प्रति अपनी भक्ति–भावना अर्पित करते हैं।

संदर्भ सूची

1. अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्। ऋग्वेद, प्रथम मण्डल, 23.19
2. भस्मी भूताङ्गसङ्गेन स्वर्याताः सगरात्मजाः।
   किं पुनः श्रद्धया देवीं ये सेवनते धृतव्रताः।। श्रीमद्भागवत पुराण, नवम स्कन्ध, 9.13
3. स्नानात्पानाच्च जाह्नव्यां पितृणां तर्पणात्तथा।
   महापातकवृन्दानि क्षयं याति दिने दिने।। पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड, 27.3
4. अग्निना दाह्यते तूलं तृणं शुष्कं क्षणाद्यथा।
   तथा गंगाजलस्पर्शात्पुंसां पाप दहेत्क्षणात्।। पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड, 27.4
5. चान्द्रायणसहस्राणि यश्चरेत्कायशोधनम्।
   पानं कुर्याद्यायेच्छ च गंगाम्भः स विशिष्यते।। पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड, 27.37
6. योऽसौ सर्वगतो विष्णुश्चित्स्वरूपी जनार्दनः।
   स एव द्रव रूपेण गंगाभो मात्र संशयः।। नारद पुराण, द्वितीय खण्ड, 29.5
7. क्षेत्रस्थमुद्धद्धृतं वापि शीतमुष्णमथापि वा।
   गाङ्गेयं तु हरेत्तोयं नात्र कार्या विचारणा।।
   नवर्ज्यं पर्युषितंतोयं वर्ज्य पर्युषित दलम्।
   न वर्ज्यं जाह्नवीतोयं न वर्ज्यं तुलसी दलम्।। नारदपुराण, द्वितीय खण्ड, 29.6–7
8. मेरोः सुवर्णत्य च सर्व रत्नै संख्योपलानामुदकस्य वापि।
   गंगा जलानां न तु शक्तिरस्ति वक्तुं गुणाख्यापरिमाणमात्रा।। नारद पुराण, द्वितीय खण्ड, 29.8
9. बहिः स्थित जलं यद्वन्नारिकेलान्तरे स्थितम्।
   तया ब्रह्माण्डबाह्यस्थं परब्रह्माम्बु जाह्नवी।। स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, 27.29
10. स्नातानां तत्र पयसि गाङ्गये नियतात्मनाम्।
    तुष्टिर्भवति या पुंसां न सा क्रतुशतैरपि।। पद्म पुराण, भूमि खण्ड, 44.20
11. स्नानाद्विधूतपापाश्च यज्जलैर्यत्यस्तथा।
    केशवासक्तमनसः प्राप्ता निर्वाणमुत्तमम्।।
    श्रुताऽभिलषिता दृष्टा स्पृष्टा पीताऽवगाहिता।
    या पावयति भूतानि कीर्तिता च दिने–दिने।। विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, 8.119–120
12. ततः सप्तषियो यस्याः प्राणायामपरायणाः।
    तिष्ठन्ति वीचिमालाभिरुह्यमानजटा तले।।
    वायोद्यैः सन्ततैर्यस्याः प्लावितं शशिमण्डलम्।
    भूयोऽधिक। कान्तिं वहत्येतदुह क्षये।।
    मेरुपृष्ठे पतत्युच्चैनिष्क्रान्ता शशिमण्डलात्।
    जगतः पावनार्थाय प्रयाति च चतुर्दिशम्।। विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, 8.110–112
13. भुक्तिमुक्तिप्रदायिन्यै भद्रदायै नमोनमः।
    भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमोऽस्तुते।। स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, 27.162
14. दुर्बुद्धयो दुराचारा हेतुका बहुसंशयाः
    पश्यन्ति मोहिता विष्णो गङ्गामन्यनदीमिव।।
    साधारणाम्भसा पूर्णां साधारणनदीमिव।
    पश्यन्ति नास्तिका गङ्गां पापोहतलोचनाः।।
    गङ्गां न बहुमन्यते ते स्युर्निरयगामिनः।। स्कन्दपुराण, काशी खण्ड, 27.54,67,80
15. गङ्गास्नानफलं ब्रह्मन् गङ्गायामेव लभ्यते।
    यथा द्राक्षाफलस्वादो द्राक्षायामेब नान्यतः।। स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, 29.10
16. सर्वस्यसर्वव्याधीनां भिषक्श्रेष्ठयै नमोऽस्तुते।
    स्थास्नुजङ्गमसम्भूतविषहन्त्र्यै नमोऽस्तुते ते।। स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, 27.159
17. स्कन्दपुराण, काशी खण्ड, अध्याय, 29
18. यो गङ्गाम्भसि निस्नातो भक्त्या स्न्त्यक्तसंशयः।
    मनुष्यचर्मणानद्धः स देवोनात्रसंशयः।। स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, 27.51
19. सरोज कुमारी, पुराणों में गंगा माहात्म्य. International Journal of Sanskrit Research Anantaa. 2016; 2(5):69-71
20. सरोज कुमारी, पुराणानुसार गंगा नदी : एक परिचय. Research Inspiration International Journal. 2016; 1(4):85-90